इकाई 6 केंजीय प्रतिमान में राजकोषीय नीति*

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 विषय प्रवेश

6.2 सरकारी क्षेत्र

6.2.1 सरकारी खर्च और गुणक

6.2.2 स्वचालित स्थिरक

6.2.3 सरकारी व्यय और कर दर में परिवर्तन का प्रभाव

6.3 सरकार का बजट

6.4 सार–संक्षेप

6.5 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

6.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप निम्नलिखित के लिए सक्षम होंगे :

- सरकारी क्षेत्र के समावेश से केंजीय प्रतिमान में बदलावों की पहचान करने में;
- सरकारी व्यय गुणक की व्याख्या और उसके निवेश गुणक से अलग स्वरूप का निरूपण करने में;
- सरकारी क्षेत्र के समावेश से संतुलन उत्पादन स्तर में परिवर्तन की व्याख्या करने में;
- स्वचालित स्थिरक की भूमिका पर चर्चा करने में;
- सरकारी व्यय या कर की दर में परिवर्तन होने पर कुल मांग वक्र में परिवर्तन की व्याख्या करने में;
- सरकारी बजट के घटकों की पहचान करने में; तथा
- सरकारी खर्च या कर दर में परिवर्तन से बजट अधिशेष में परिवर्तन की व्याख्या करने में।

6.1 विषय प्रवेश

यह इकाई पिछले इकाई का विस्तार है। इस इकाई में हम केन्जीय प्रतिमान में सरकारी क्षेत्र को शामिल करते हैं। हम अपने दो–क्षेत्र प्रतिमान को तीन क्षेत्र प्रतिमान तक विस्तारित करते हैं। इस प्रकार अब हमारे पास तीन आर्थिक क्षेत्र हैं: परिवार, फर्म और सरकार। अतः

$$AD = C + I + G$$

जिस समय हम सरकारी क्षेत्र को शामिल करते हैं, बहुत सारी चीजें बदल जाती हैं। सरकार के पास कर लगाने से राजस्व अर्जित करने की शक्ति है। सरकार लोगों के कल्याण के लिए पैसा खर्च भी करती है। कभी–कभी, सरकार को उधार लेने की आवश्यकता होती है जब उस का राजस्व व्यय से कम होता है। ऐसी स्थिति को बजट घाटा (budget deficit) कहा जाता है।

* डॉ० निधि तेवतिया, सहायक प्राध्यापक, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

जब राजस्व सरकारी व्यय से अधिक हो जाता है, तो यह बजट अधिशेष (budget surplus) की स्थिति है। सरकार कर दर में बदलाव या सरकारी खर्च के स्तर को बदलने के माध्यम से राजकोषीय नीति (fiscal policy) का उपयोग करती है। सरकार के हस्तक्षेप का उद्देश्य अर्थव्यवस्था के संचालन को सुचारू रखना है।

6.2 सरकारी क्षेत्र

सरकार सामान और सेवाओं की खरीद के रूप में आय और उत्पादन के संतुलन के स्तर को प्रभावित करती है। इसलिए, सरकारी खरीद (G) सकल मांग का एक महत्वपूर्ण घटक है।

$$AD = C + \bar{I} + G$$

जहां, $\bar{I}$ नियोजित या स्वायत्त निवेश है, जो आय से स्वतंत्र है।

जैसा कि सरकारी क्षेत्र व्यक्तियों से कर एकत्र करता है, उपभोग फलन में एक छोटा सा परिवर्तन हो सकता है। उपभोग (C) निर्वर्त्य आय (disposable income, Y_D) पर निर्भर है, ना कि कुल आय पर।

$$Y_D = Y - TA$$

जहां Y कुल आय है और TA कर है। एक अन्य घटक, जो निर्वर्त्य आय में अपना स्थान बना लेता है, वह है सरकारी अन्तरण (TR) जैसे कि सब्सिडी, पेंशन, छात्रवृत्ति, आदि। ये व्यक्ति की आय (Y) में बढ़ोतरी करता है, लेकिन इसके अनुरूप कोई उत्पादन नहीं है। इसलिए,

$$Y_D = (Y - TA + TR)$$

उपभोग फलन में YD को प्रतिस्थापित करते हुए, हमें कुल मांग के रूप मे मिलता है

$$AD = \bar{C} + cY_D + \bar{I} + G$$

$$AD = \bar{C} + c(Y - TA + TR) + \bar{I} + G$$

हम मानते हैं कि सरकारी खरीद $(\bar{G})$ एक निश्चित राशि है और यह अन्तरण $(\overline{TR})$ की राशि भी एक नियत स्तर पर रखती है। सरकार कर के रूप में आय का एक अंश (t) भी एकत्र करती है। इसलिए,

$$G = \bar{G}$$
$$TR = \overline{TR}$$
$$TA = t.Y$$

अब उपभोग फलन को निम्नलिखित रूप में लिखा जा सकता है :

$$C = \bar{C} + c(Y + \overline{TR} - tY)$$

$$= \bar{C} + c\,\overline{TR} + c(1 - t)Y$$

यहां यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि अन्तरण $(c\,\overline{TR})$ द्वारा उपभोग व्यय में वृद्धि कर रहे हैं अर्थात, अन्तरण की मात्रा गुना उपभोग करने के लिए सीमांत प्रवृत्ति।

दूसरी ओर, आयकर आय के प्रत्येक स्तर पर उपभोग खर्च को कम करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कर निर्वर्त्य आय (Y_D) को प्रभावित कर रहे हैं न कि आय (Y) को। इसलिए, यद्यपि सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) तो 'c' ही बनी रहती है किन्तु सीमांत उपभोग c (1 – t) हो जाता है, जहां (1 – t) निर्वर्त्य आय है। आइए इसे एक उदाहरण द्वारा समझने का प्रयास करें।

यदि c = 0.8 और t = 0.2 है तो आमदनी मे से सीमान्त उपभोग है (1 – t)

= 0.8(1 – 0.2) = 0.8(0.8) = 0.64

अब, AD हम समीकरण पर वापस जा रहे हैं।

$$AD = [\bar{C} + c\overline{TR} + \bar{I} + \bar{G}] + c(1-t)Y$$

$$AD = \bar{A} + c(1-t)Y$$

यहां सभी स्वायत्त पदों को एक साथ लिया गया है और उन्हें $\bar{A}$ द्वारा निरूपित किया गया है। सरकारी क्षेत्र के आगमन से आय और उत्पादन स्तर प्रभावित होते हैं। हम परिवर्तन को बीजगणित के साथ–साथ रेखाचित्र द्वारा भी देखेंगेः

$$Y = AD$$

$$Y = \bar{A} + c(1-t)y$$

$$Y - [c(1-t)Y] = \bar{A}$$

$$Y(1 - c + ct) = \bar{A} \qquad \text{अर्थात} \quad Y = \frac{\bar{A}}{1 - c + ct}$$

या $$Y[1 - c(1-t)] = \bar{A} \qquad \text{अर्थात} \quad Y = \frac{\bar{A}}{1 - c(1-t)}$$

रेखाचित्र 6.1 में हम दो कुल मांग वक्र दर्शाते हैं। AD_1 में सरकारी क्षेत्र की अनुपस्थिति दिखाई देती है और AD_2 में कर और स्थानांतरण शामिल हैं। AD_1 की तुलना AD_2 में ज्यादा समतल है और AD_1 की तुलना में एक उच्च अन्तः खंड बनाता है।

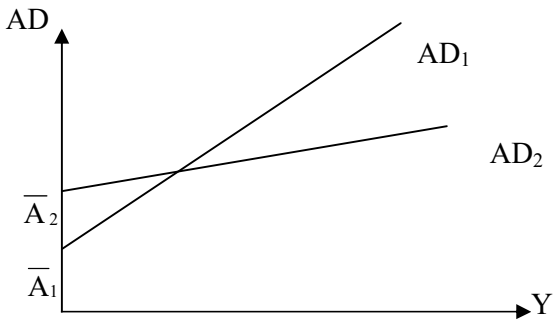

रेखाचित्र 6.1: सरकारी क्षेत्र और AD वक्र

AD2 का ढलान c केबजाय c(1–t) है और अन्तः खंड में AD_1 के अन्तः खंड के $\left(\overline{C}+\overline{I}\right)$ के साथ–साथ $(c\,\overline{TR}+\overline{G})$ भी शामिल है।

रेखाचित्र 6.2 दिखाता है कि सरकारी क्षेत्र की उपस्थिति आय और उत्पादन के संतुलन स्तर को कैसे प्रभावित करती है। पहला केन्जीय क्रॉस बिंदु E_1 पर होता है, जहाँ 45 डिग्री की रेखा AD_1 को काटती है।

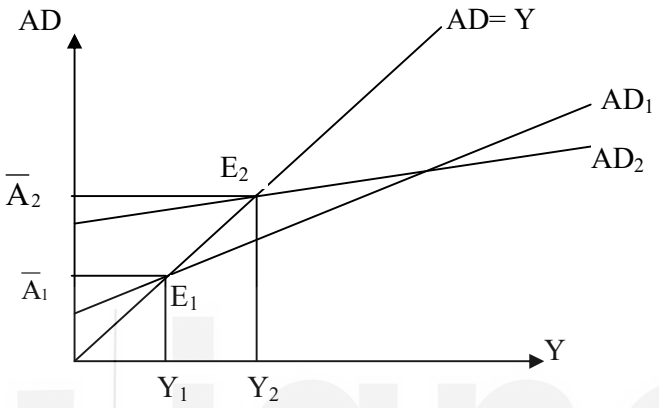

आय और उत्पादन

रेखाचित्र 6.2: सरकारी क्षेत्र और सन्तुलन

अब, चूंकि सरकारी व्यय और अन्य घटक जैसे कि कर और अन्तरण अस्तित्व में जाते हैं, AD_1 ज्यादा समतल हो जाता है और इसका y–अन्तः खंड (intercept) भी बदल जाता है। नए वक्र को AD_2 के रूप में चिन्हित किया गया है। दूसरा केंजीय क्रॉस बिंदु E_2 पर होता है। यह नया सन्तुलन हमें Y_2 के रूप में सन्तुलन उत्पादन प्रदान करता है। हम देख सकते हैं कि Y_2 Y_1 से अधिक है। इसलिए, हम कह सकते हैं कि सरकारी क्षेत्र के आगमन से अर्थव्यवस्था में आय और उत्पादन का स्तर बढ़ता है।

बोध प्रश्न –1

1) सरकारी क्षेत्र की उपस्थिति में नए उपभोग फलन की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) नए कुल मांग वक्र (फलन) को लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) सरकारी क्षेत्र की उपस्थिति में नए संतुलन आय स्तर की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.2.1 सरकारी खर्च और गुणक

हमें सरकारी क्षेत्र को सम्मिलित करते हुए अब गुणक को फिर से लिखना है।

$$\frac{\Delta Y}{\Delta \overline{A}} = \frac{1}{1-c+ct} \quad \text{or} \quad \frac{1}{1-c(1+t)}$$

सरकारी क्षेत्र की अनुपस्थिति में, गुणक $\frac{1}{1-c}$ (इकाई 10 देखें) था। हम देखते हैं कि वस्तुओं और सेवाओं की सरकारी खरीद अर्थव्यवस्था में पर्याप्त बदलाव लाती है। गुणक कम हो जाता है। सरकारी व्यय सहित गुणक को α_G के रूप में लिखा जा सकता है। तो, हम कह सकते हैं कि $\alpha_G < \alpha$ । आइए एक उदाहरण की मदद से समझें।

यदि $c = 0.8$ और $t = 0.2$ तब

$$\alpha = \frac{1}{1-c} = \frac{1}{1-0.8} = \frac{1}{0.2} = 5$$

और $$\alpha_G = \frac{1}{1-c+ct} = \frac{1}{1-0.8+0.8(0.2)}$$

$$= \frac{1}{0.2+0.16} = \frac{1}{0.36} = 2.77$$

यह स्पष्ट है कि $\alpha_G < \alpha$.

6.2.2 स्वचालित स्थिरक

स्वचालित स्थिरक सरकार के बजट में राजस्व और व्यय मद हैं जो अर्थ व्यवस्था की स्थिति के साथ स्वचालित रूप से इस तरह बदलते हैं जैसे जीडीपी में स्थिरता आ जाती है। हमने पाया कि आयकर गुणकर को कम कर देता है। लेकिन आयकर गुणक को कम क्यों करता है? वे गुणक को कम करते हैं क्योंकि आय में होने वाले परिवर्तनों से उपभोग की प्रेरित वृद्धि कम हो जाती है। जब इस तरह के स्थिरक मौजूद होते हैं, तो स्वायत्त व्यय में परिवर्तन (उदाहरण के लिए $\bar{I}$) का उत्पादन पर कम प्रभाव पड़ेगा। इस तरह के स्थिरक की उपस्थिति अर्थव्यवस्था में अस्थिरता को कम करती है। वे आघात अवशोषक के रूप में कार्य करते हैं।

6.2.3 सरकारी व्यय और कर–दर में परिवर्तन का प्रभाव

आइए अब हम राजकोषीय नीति में बदलाव पर विचार करें। राजकोषीय नीति उपस्कर सरकारी खर्च, स्थानान्तरण और कर की दर हैं। सरकार अर्थव्यवस्था की स्थिति के अनुसार इन उपस्करों के परिमाण में परिवर्तन करती है।

आइए हम राजकोषीय नीति पहल के आरेखात्मक निरूपण पर विचार करें। संतुलन उत्पादन का प्रारंभिक स्तर Y_0 है जैसा कि रेखाचित्र 6.3 में दिखाया गया है। एक स्वायत्त खर्च यानी G में परिवर्तन से $\overline{A}_0$ खिसक कर $\overline{A}_1$ हो जाता है, और AD_0 के समानांतर चलता है। संतुलन स्थिति के अनुसार, संतुलन आय और उत्पादन Y_0 से Y_1 हो जाता है। क्या आय में वृद्धि स्वायत्त खर्च में वृद्धि के समान है? आय का विस्तार कितना हुआ है?

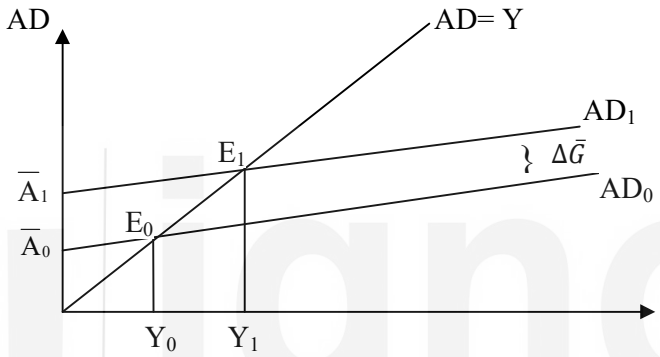

रेखाचित्र. 6.3 : संतुलन उत्पादन और सरकार खर्च

स्वायत्त सरकारी खर्च में परिवर्तन कुल मांग में परिवर्तन के बराबर है,

$$\Delta Y_0 = \Delta \overline{G} + c(1-t)\,\Delta Y_0$$

हमने मान लिया है, कि $\overline{C}$, $\overline{TR}$ और $\overline{I}$ स्थिर हैं। इस प्रकार, संतुलन आय में परिवर्तन है,

$$\Delta Y_0 = \frac{1}{1-c(1+t)}\Delta \overline{G}$$

$$= \alpha_G . \Delta \overline{G}$$

अन्य उपस्कर, अर्थात, आयकर आम तौर पर कम कर दिया जाता है ताकि व्यक्तियों को उच्च निर्वर्त्य आये प्राप्त हो। रेखाचित्र 6.4 आय कर दर में कमी के प्रभावों को दर्शाता है। इसका मतलब है कि 't' घटता है, जो बदले में कुल मांग वक्र के ढलान को बढ़ाता है। प्रारंभिक संतुलन आय Y_0 है, अर्थात, AD_0 और 45 डिग्री की लाइन के बीच कटान बिन्दु है। जैसे AD_0 घूमकर AD_1 होता है, नया संतुलन E_1 पर होता है जो हमें Y_1 के रूप में उत्पादन का नया संतुलन स्तर देता है। जैसे ही आयकर की दर घटती है, संतुलन आय और उत्पादन बढ़ता है। संतुलन आय में परिवर्तन का पता लगाने के लिए, हमें आय में परिवर्तन को AD में परिवर्तन के बराबर करना होगा। AD में परिवर्तन के दो घटक हैं, अर्थात्

1) कर की दर में कमी के कारण आय के प्रारंभिक स्तर पर खर्च में परिवर्तन;
2) अधिक आय के कारण खर्च में बदलाव।

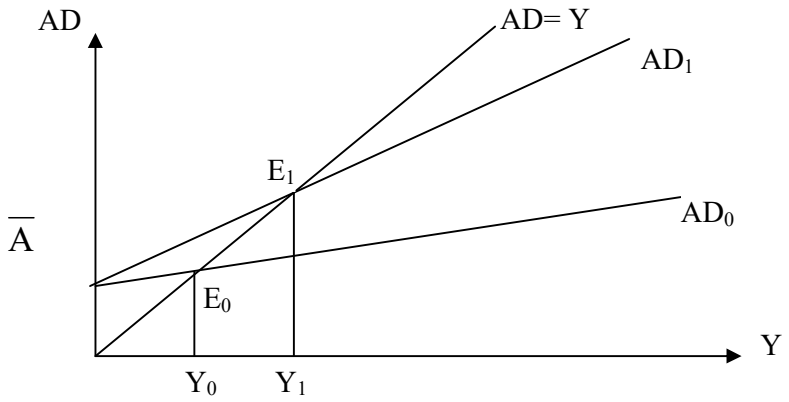

आय और उत्पादन

रेखाचित्र 6.4 : आयकर दर में परिवर्तन

दो घटकों को मिलाकर, हम लिख सकते हैं,

$$\Delta Y_0 = -cY_0\Delta t + c\,(1 - t')\,\Delta Y_0$$

जहां, t, नई कर दर है। किन्तु,

$$Y_0 = \left(\frac{1}{1-c+ct}\right).\overline{A}$$

इसलिए,

$$\frac{\Delta Y_0}{\Delta t} = \frac{-c}{(1-c+ct)^2}\ .\overline{A}$$

और

$$\overline{A} = Y_0(1-c+ct)$$

($\bar{A}$) के मान का उपयोग करते हुए, हम प्राप्त करते हैं

$$\frac{\Delta Y_0}{\Delta t} = \frac{-c}{(1-c+ct)^2}\ .Y_0(1-c+ct)$$

$$\frac{\Delta Y_0}{\Delta t} = \frac{-cY_0}{(1-c+ct)}$$

अथवा

$$\Delta Y_0 = \frac{-cy_0}{(1-c+ct)} .\Delta t$$

जहां आयकर गुणक $\frac{-cy_0}{1-c+ct}$ है जिसे α_t द्वारा दर्शाया किया जाता है।

इसी तरह, अन्तरण भुगतान से होने वाले प्रभाव को इस प्रकार लिखा जा सकता हैः

$$\frac{\Delta Y_0}{\Delta TR} = \frac{c}{1-c+ct} = \alpha_{TR}$$

अर्थात्

$$\Delta Y_0 = \left(\frac{c}{1-c+ct}\right) . \Delta TR$$

इसलिये,

$$Y_0 = \frac{c\overline{TR} + \overline{A}}{(1-c+ct)}$$

जहां $c\overline{TR}$ को अलग से दिखाया गया है जबकि अन्य $\overline{A}$ स्वायत्त खर्चों को दिखा रहा है। अन्तरण में कमी से उत्पादन का स्तर कम होगा और इसके विपरीत अन्तरण में वृद्घि से उत्पादन का संतुलन स्तर बढ़ेगा। अन्तरण में वृद्धि कुल मांग वक्र को समानांतर ऊपर की ओर ले जाएगी और अन्तरण में गिरावट कुल मांग वक्र को नीचे की ओर स्थानांतरित करेगी।

6.3 सरकार का बजट

बजट एक शब्द है जो हर व्यक्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। परिवारों को यह जानने में दिलचस्पी है कि उन्हें कितनी आय प्राप्त होगी और एक निश्चित समय अवधि के लिए उनका खर्च क्या है।

इसी तरह, सरकार को राजस्व के अपने स्रोतों और उन क्षेत्रों का पता लगाने की जरूरत है जहां इसे खर्च करने की जरूरत है। इसलिए, सरकार के बजट का बहुत महत्व है। इस संदर्भ में, हम सरकारी बजट का प्रतिनिधित्व करने के लिए बजट शब्द का उपयोग करेंगे। बजट राजस्व और व्यय का एक रिकॉर्ड है। अगर सरकार को बजट की कमी का सामना करना पड़ रहा है, तो इसका मतलब है कि सरकार प्राप्तियों से ज्यादा खर्च कर रही है। यदि यह एक बजट अधिशेष का अनुभव करती है, तो सरकारी व्यय उसके राजस्व से कम है। आमतौर पर ज्यादातर सरकारों को बजट की कमी का सामना करना पड़ता है।। बीज गणित के रूप में

बजट अधिशेष (BS) $= \overline{TA} - \overline{G} - \overline{TR}$

$= tY - \overline{G} - \overline{TR}$ जहां $TA = tY$

यह सामान्य ज्ञान है कि जब आय का स्तर कम होता है, तो राजस्व भी कम हो जाता है, जिस से बजट घाटा होता है और इसके विपरीत आय का स्तर अधिक होता है, तो राजस्व भी अधिक हो जाता है। रेखाचित्र 6.5 से पता चलता है कि आय का स्तर कम होने पर G और TR का योग tY से अधिक हो जाता है और इसके विपरीत आय का स्तर अधिक होने पर $\overline{G}$ और $\overline{TR}$ का योग tY से कम हो जाता है।

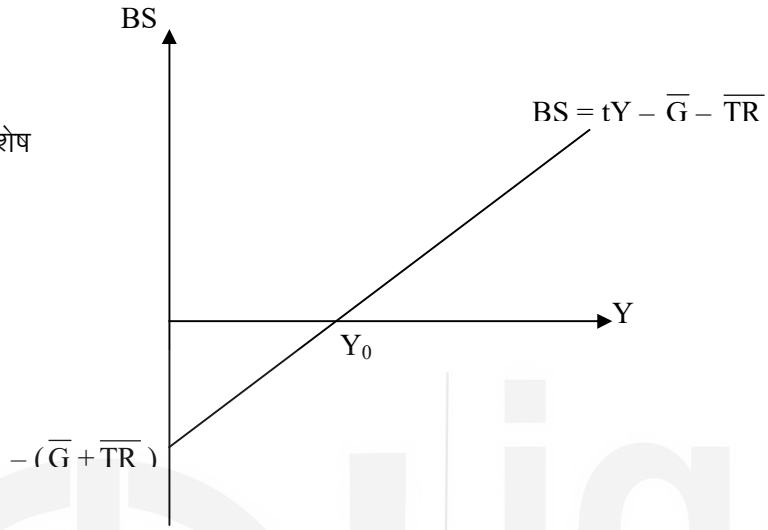

रेखाचित्र 6.5: सरकारी बजट

आय स्तर Y_0 कोई कमी और कोई अधिशेष नहीं दिखाता है। Y_0 के बाईं ओर, सरकार घाटे में चलती है और Y_0 के दाईं ओर, अधिशेष मौजूद है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उच्च आय स्तर पर, सरकार की कर प्राप्ति अधिक होती है। यदि राजकोषीय नीति साधनों के कारण आय में वृद्धि नहीं होती है, तो भी सरकारी घाटा घट सकता है। निवेश (I) में वृद्धि से Y में वृद्धि होगी जो कर प्राप्ति को बढ़ाती है और इस तरह से बजट घाटा कम हो जाता है। यह स्वभाविक ही है कि, मंदी के समय में, बजट में घाटा देखा जाता है।

बजट, कर और सरकार खर्च

यह सोचना तर्कसंगत लगता है कि सरकारी खर्च में वृद्धि से बजट अधिशेष ($\overline{G}$) में कमी आएगी, हालांकि यह हमेशा सच नहीं होता है। क्योंकि आय और उत्पादन के संतुलन स्तर पर सरकारी खर्च बढ़ने का गुणक प्रभाव पड़ता है, इससे कर प्राप्तियां उच्च होती हैं। ऐसी संभावना है कि, ऐसे बढ़ते सरकारी खर्च ($\overline{G}$) का नकारात्मक प्रभाव कर प्राप्तियों के सकारात्मक प्रभाव से कम हो जाता है, जिससे बजट अधिशेष कम नहीं होता है। आइए हम देखें कि बीजगणितीय रूप से, सरकारी खर्चों में वृद्धि कैसे बजट के अधिशेष को कम करती है।

$\Delta Y_0 = \alpha_G.\Delta G$ (उच्च सरकारी खर्च के कारण)

आय में परिवर्तन के कारण, कर राजस्व में भी परिवर्तन होता है, अर्थात

$$\Delta TA = t.\Delta Y_0$$
$$= t.\ \alpha_G.\Delta G$$

बजट अधिशेष में परिवर्तन, होगा

$$\Delta BS = \Delta TA - \Delta \overline{G}$$

$= t\alpha_G.\Delta\overline{G} - \Delta\overline{G} \qquad = (t.\alpha_G - 1)\Delta\overline{G}$

$$= \left[\frac{t}{1-c+ct} - 1\right]\Delta\overline{G}$$

अथवा

$$= \left[\frac{t}{1-c(1-t)} - 1\right]\Delta\overline{G}$$

$$= \left[\frac{t-1+c(1-t)}{1-c(1-t)}\right]\Delta\overline{G}$$

$$= (-)\left[\frac{1-t-c(1-t)}{1-c(1-t)}\right]\Delta\overline{G}$$

$$= (-)\left[\frac{(1-t)-c(1-t)}{1-c(1-t)}\right]\Delta\overline{G}$$

$$= (-)\left[\frac{(1-t)(1-c)}{1-c(1-t)}\right]\Delta\overline{G}$$

अब, आइए एक संख्यात्मक उदाहरण पर विचार करें, जहां $c = 0.8, t = 0.25$ और $\Delta G =$ रु.1

$$\Delta BS = (-)\left[\frac{(1-0.8)(1-0.25)}{1-0.8(1-0.25)}\right]Re.1$$

$$= (-)\frac{(0.2)(0.75)}{1-0.8(0.75)}$$

$$= -\frac{0.15}{1-0.6} = -\frac{0.15}{0.4} \quad = रु. -0.375.$$

इसलिए सरकारी खर्च में एक रुपये की वृद्धि से सरकार के अधिशेष में रु 0.375 कम होंगे। इसी तरह, कर वृद्धि से बजट अधिशेष पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। यदि सरकार कर की दर और सरकारी खरीद को एक ही राशि से बढ़ाती है, तो बजट अधिशेष पर क्या प्रभाव पड़ेगा? प्रतिक्रिया में 'संतुलित बजट गुणक' नामक एक अवधारणा का स्पष्टीकरण शामिल होगा। संतुलन बजट अपरिवर्तित होगा क्योंकि गुणक 1 के बराबर होगा।

स्वायत्त निवेश में परिवर्तन के कारण संतुलन आय प्रभावित हो सकती है जिसमें स्वायत्त निवेश, स्वायत्त सरकारी व्यय और सरकारी स्थानांतरण और कर नीतिया कर दरें शामिल हैं।

सरकारी खर्चे में परिवर्तन के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए हमें यह मानने की जरूरत है कि स्वायत्त खर्च के केवल एक घटक में परिवर्तन होता है जो कि सरकारी व्यय है। इसलिए, निवेश गुणक की तरह, सरकारी व्यय गुणक है।

$$\alpha_G = \frac{1}{1-c} \text{ or } \Delta Y_0 = \frac{1}{1-c}\Delta\overline{G}$$

इसी प्रकार कर की दर में परिवर्तन के लिए, कर गुणक है

$$\alpha_T = \frac{-c}{1-c}$$

$$\text{or } \Delta Y_0 = \frac{1}{1-c}(-c * \Delta\overline{T}) = \frac{-c}{1-c}\Delta\overline{T}$$

अब सरकार के व्यय और कर की दर में परिवर्तन दोनों के कारण आय में परिवर्तन है:

$\Delta Y = \alpha_G.\Delta G + \alpha_T.\Delta T$

$\Delta Y = \alpha_G.\Delta G + \alpha_T.\Delta G \quad (\text{as } \Delta G = \Delta T)$

$\Delta Y = (\alpha_G+\alpha_T)\Delta G$

$$\Delta Y = \left[\frac{1}{1-c} + \left(\frac{-c}{1-c}\right)\right]\Delta G$$

$$\Delta Y = \left(\frac{1-c}{1-c}\right)\Delta G$$

$\Delta Y = \Delta G$ अथवा $\frac{\Delta Y}{\Delta G} = 1$

हमने पाया कि उत्पादन में वृद्धि सरकारी खर्च की वृद्धि मात्रा के बिल्कुल समान होता है। संतुलित बजट गुणक 1 के बराबर होता है।

बोध प्रश्न –2

1) स्वचालित स्थिरक क्या हैं? व्याख्या करें।

……

……

……

……

2) निम्नलिखित को देखते हुए सरकारी खर्च के गुणक की गणना करें:

c = 0.6 t = 0.12

……

……

……

……

3) सरकारी खर्च में बदलाव होने पर कुल मांग (AD) वक्र कैसे बदलता है? क्या यह आय और उत्पादन के संतुलन स्तर को भी बदलता है?

.....

.....

.....

.....

4) बजट अधिशेष की अवधारणा की संक्षेप में व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

5) संतुलित बजट गुणक कैसे काम करता है?

.....

.....

.....

.....

6.4 सार संक्षेप

इस इकाई में हमने सरकारी क्षेत्र को केन्जीय प्रतिमान में प्रविष्ट और कुल मांग को फिर से परिभाषित किया। जैसे ही सरकारी क्षेत्र को शामिल किया जाता है, सरकार द्वारा राजकोषीय नीतिगत उपस्कर जैसे कर, अन्तरण और सरकारी खर्च का उपयोग किया जाता है। सरकारी गुणक और कर गुणक निवेश गुणक से छोटे पाए गए। स्वचालित स्थिरक के कारण, अर्थव्यवस्था में अस्थिरता कम हो जाती है। इसके बाद, हमने सरकार के बजट की अवधारणा को समझा।

सरकार घाटे के समय उधार लेती है जिससे निजी कंपनियों के लिए धन की व्यवस्था करना मुश्किल हो जाता है। जैसे–जैसे सरकारी खर्च बढ़ेगा, बजट घाटा बढ़ेगा। एक ही समय में, संतुलन उत्पादन बढ़ता है, जो बदले में कर प्राप्तियों को बढ़ाता है। संतुलित बजट गुणक दिखाता है कि सरकारी खर्च बढ़ने के साथ ही उसी मात्रा में उत्पादन कैसे बढ़ता है।

6.5 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न –1

1) $C = \overline{C} + c(Y + \overline{TR} - tY) = \overline{C} + c\,\overline{TR} + c(1-t)Y$

2) $AD = \overline{A} + c(1-t)Y$, where $\overline{A} = \overline{C} + c\overline{TR} + \overline{I} + \overline{G}$

3) रेखाचित्र 6.2 का संदर्भ लें।

बोध प्रश्न –2

1) उपभाग 6.2.2 पर ध्यान दें।

2) $$\frac{1}{1-c+ct} = \frac{1}{1-0.6+0.6(0.12)}$$

3) उपभाग 6.2.3 का प्रयोग करें। हां, यह आय और उत्पादन के संतुलन स्तर को बदलता है। यह बढ़ जाता है।

4) बजट अधिशेष सरकारी राजस्व की सरकारी व्यय पर अधिकता है।

5) उपभाग 6.3.1 पर ध्यान दें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 7 बाह्य क्षेत्र*

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 खुली अर्थव्यवस्था में प्रवाह के प्रकार

7.2.1 सकल घरेलू उत्पाद (GDP) और सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)

7.2.2 व्यापार संतुलन

7.2.3 अदृश्य मदें

7.2.4 चालू और पूंजी खाता

7.2.5 भुगतान का संतुलन

7.3 शुद्ध निर्यात फलन

7.4 खुली अर्थव्यवस्था में उत्पादन संतुलन

7.5 सार संक्षेप

7.6 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

7.0 उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद आपको निम्नलिखित बिंदुओं को समझने में सक्षम होना चाहिएः–

- खुली अर्थव्यवस्था में प्रवाह के प्रकारों की पहचान करना;
- शुद्ध निर्यात फलन की अवधारणा की व्याख्या करना;
- बाह्य क्षेत्र (external sector) की उपस्थिति में कुल मांग वक्र का वर्णन करना; तथा
- खुली अर्थव्यवस्था में उत्पादन के संतुलन स्तर का पता लगाना।

7.1 प्रस्तावना

आइए हम इस पाठयक्रम में जो सीखा है उसकी पुनरावर्ती करें। इकाई 4 में हमने पारम्परिक अर्थव्यवस्था (classical economy) की महत्वपूर्ण विशेषताओं का वर्णन किया है। हमने बताया कि पारम्परिक अर्थव्यवस्था में उत्पादन, मूल्य स्तर और मजदूरी दर कैसे निर्धारित की जाती है। उस इकाई में हमने केंजीय आर्थिक प्रणाली का भी एक संक्षिप्त विचार दिया है। हमने पारम्परिक अर्थव्यवस्था की प्रणाली और केंजीय आर्थिक प्रणाली के बीच महत्वपूर्ण अंतर को बताया है। इकाई 5 में हमने उत्पादन निर्धारण के केंजीय प्रणाली पर विस्तार से चर्चा किया है। इस ढांचे में हमने माना कि दो आर्थिक घटक हैं। इस प्रकार हमारे पास अर्थव्यवस्था में दो क्षेत्र हैं – निजी क्षेत्र और घरेलू क्षेत्र। निजी क्षेत्र उत्पादन करता है। माल और सेवाओं के उत्पादन के लिए निजी क्षेत्र पूंजीगत वस्तुओं में निवेश करता है। घरेलू क्षेत्र फर्मों के लिए श्रम की आपूर्ति करता है और फर्मों से मजदूरी

* प्रो० कौस्तुभ बारिक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय।

(आय) प्राप्त करता है। घरेलू क्षेत्र फर्मों द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग करता है। इस प्रकार आय और उत्पादन का वृत्तीय प्रवाह (इकाई 2 देखें) होता है।

केंजीय प्रणाली में कुल मांग (AD) में उपभोग (C) और निवेश (I) शामिल हैं। जैसा कि आप जानते हैं, मांग केंजीय प्रणाली में एक प्रमुख भूमिका निभाती है और मांग अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी होने पर अपनी खुद की आपूर्ति करती है (इकाई 4 देखें)। इस प्रकार जो कुछ भी मांग की जाती है (यानी, कुल मांग, AD) की आपूर्ति हो जाती है (यानी, कुल आपूर्ति, AS)। AD और AS के बीच बराबरी केंजीय प्रणाली में उत्पादन के संतुलन स्तर को निर्धारित करती है। केंजीय क्रॉस 'आरेख (इकाई 5 देखें) में 45^0 लाइन यह सुनिश्चित करती है कि AD और AS के बीच बराबरी है।

आपको केंजीय प्रतिमान के बारे में दो महत्वपूर्ण मुद्दों को याद रखना चाहिए। सबसे पहले, कुल मांग में वृद्धि से संतुलन उत्पादन स्तर में वृद्धि होती है। मांग में इस तरह की वृद्धि किसी भी आर्थिक घटक जैसे घरेलू (परिवारिक), फर्मों या सरकार के माध्यम से हो सकती है। इसी तर्क के आधार पर कुल मांग में कमी से संतुलन उत्पादन स्तर में गिरावट आती है। दूसरा, उपभोग की सीमांत प्रवृत्ति (MPC) का मान बहुत महत्वपूर्ण है। अन्य बातें सामान्य रहने पर यदि उपभोग सीमान्त प्रवृति का मान ज्यादा होगा तो गुणक प्रभाव की वजह से उत्पादन का संतुलन स्तर भी ज्यादा होगा। इसी प्रकार अन्य बातें सामान रहने पर यदि सीमान्त उपभोग प्रवृति की मान कम होती है तो उत्पादन का संतुलन स्तर भी कम होगा।

इकाई 6 में हमने एक और आर्थिक घटक, सरकारी क्षेत्र, को कुल मांग में सम्मिलित किया। सरकारी क्षेत्र की तीन महत्वपूर्ण भूमिका है, जैसे (i) घरेलु क्षेत्रों से कर एकत्र करती हैं, (ii) घरेलु क्षेत्रो और फर्मों को अनुवर्ती (subsidy) प्रदान करती हैं, और (iii) उत्पादन गतिविधियों में शामिल होती है। जब सरकारी क्षेत्र में व्यय (G) होता है तो कुल मांग में वृद्धि होती है। इससे संतुलन उत्पादन में वृद्धि होती है। हालांकि, सरकार अपने खर्च को पूरा करने के लिए कर को एकत्र करती है। खर्च करने योग्य आय कम हो जाती है। सरकार की तीसरी गतिविधि का अर्थ है कि सरकार निवेश करती है (निजी क्षेत्र की फर्मों के समान)। विश्लेषण में सरलता के लिए, हमने मान लिया की सरकारी व्यय स्थिर है ($\bar{G}$)। जब सरकार का बजट संतुलित होता है, तो गुणक 1 के बराबर होता है, जिसका अर्थ है कि संतुलन उत्पादन केवल ΔG से बढ़ता है।

वर्तमान इकाई में हम बाह्य क्षेत्र (शुद्ध निर्यात, NX) को सम्मिलित करते हैं। अक्सर इसे बाकी दुनिया (RoW) कहा जाता है। बाह्य क्षेत्र को सम्मिलित करने की वजह से हम अपने विश्लेषण में, खासकर के उत्पादन के संतुलन स्तर में परिवर्तन में, आवश्यकतानुसार परिवर्तन लाते है ।

7.2 खुली अर्थव्यवस्था में प्रवाह के प्रकार

पिछली इकाई में हमने माना था कि अर्थव्यवस्था में बाह्य क्षेत्र नहीं है। उपरोक्त का एक निहितार्थ यह है कि देश का अन्य देशों के साथ बाहरी व्यापार नहीं है। इस प्रकार वस्तुओं और सेवाओं का कोई निर्यात और आयात नहीं होता है। वर्तमान परिदृश्य में ऐसी धारणा अवास्तविक है। देश आपस में व्यापार करते हैं। जब देश में दूसरे देशों के वस्तुओं और सेवाओं का प्रवाह होता है, तो हम इसे 'खुली अर्थव्यवस्था' कहते हैं।

एक खुली अर्थव्यवस्था में घरेलू आर्थिक घटको (जैसे, घर, फर्म और सरकार) बाकी दुनिया (RoW) या बाह्य क्षेत्र के सहभागिता करते हैं। बाह्य क्षेत्र को बेची जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं को निर्यात (X) कहा जाता है। इसी प्रकार बाह्य क्षेत्र से खरीदी गई वस्तुओं और सेवाओं को आयात (M) कहा जाता है। जब हम निर्यात से आयात घटाते हैं, तो हम 'शुद्ध निर्यात' (NX) या 'व्यापार संतुलन' प्राप्त करते हैं। इस प्रकार,

$$NX = (X - M) \quad \ldots(7.1)$$

हम (7.1) में देख सकते हैं कि जब निर्यात आयत से ज्यादा होता है तो शुद्ध निर्यात (NX) सकारात्मक होता है। इसी तरह जब निर्यात आयात से कम होता है तो शुद्ध निर्यात (NX) ऋणात्मक होता है।

7.2.1 सकल घरेलू उत्पाद (GDP) और सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)

जैसा कि इकाई 2 में बताया गया है, की खुली अर्थव्यवस्था के मामले में GDP और GNP (सकल घरेलु उत्पाद और सकल राष्ट्रीय उत्पाद) के बीच अंतर है। GDP देश के भौगोलिक सीमाओं के भीतर घरेलू निवासियों और विदेशियों द्वारा उत्पादित कुल उत्पादन (या कुल आय या कुल व्यय) को संदर्भित करता है। दूसरी ओर, GNP को देश के नागरिकों की कुल आय (या व्यय, या उत्पादन) के रूप में परिभाषित किया गया है। मान लीजिए भारत का कोई नागरिक अमेरिका में काम कर रहा है। वह जो भी कमाता है वह भारत के GNP का हिस्सा है। इसी तरह, मान लीजिए कि एक जर्मन नागरिक भारत में एक फर्म में काम कर रहा है। उनकी आय भारत की GDP का हिस्सा है (क्योंकि यह भारत की भौगोलिक सीमा के भीतर उत्पन्न है) लेकिन भारत के GNP का हिस्सा नहीं है (क्योंकि यह एक भारतीय नागरिक द्वारा अर्जित नहीं किया गया है)। कई अन्य कारक हो सकते हैं (जैसे कि सेवाएं) जो देशों के बीच कारोबार कर सकते हैं। उत्पादन के इन कारकों की प्रतिफल देश के GNP का हिस्सा है, जो मूल रूप से उनका है।

आइए हम विदेशों से शुद्ध घटक आय (Net Factor Income from Abroad, NFIA) शब्द को परिभाषित करतें है। NFIA निम्नानुसार दिया गया हैः–

विदेशों से शुद्ध घटक आय (NFIA) = विदेशी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के घरेलू कारकों द्वारा अर्जित आय – घरेलू अर्थव्यवस्था में उत्पादन के विदेशी कारकों द्वारा अर्जित आय

हम सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) को सकल घरेलु उत्पाद (GDP) से निम्नानुसार प्राप्त करते हैंः

$$GNP = GDP + NFIA \quad \ldots(7.2)$$

आपको ध्यान देना चाहिए कि NFIA सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है। GDP और GNP के बीच अंतर अक्सर काफी बडा हो सकता है। उदाहरण के लिए, GDP उन देशों में GNP से अधिक हो सकता है जहां अधिकांश उत्पादन इकाइयाँ विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के स्वामित्व में हैं (ताकि अर्थव्यवस्था के भीतर उत्पन्न आय का एक बडा हिस्सा, विदेशियों को प्राप्त हो) या जिनके पास विदेशों में रोजगार के लिए बहुत बडी आबादी है। भारत के मामले में, NFIA कई वर्षों से सकारात्मक (positive) है। 2019 में यह GDP का लगभग 4.5 प्रतिशत था।

7.2.2 व्यापार संतुलन

देशों के बीच प्रवाह के प्रकार इकाई 2 में आय और व्यय के वृत्तीय प्रवाह के माध्यम से वर्णित हैं। निर्यात से प्राप्तियों के रूप में निर्यात देश में धन (विदेशी मुद्रा) लाता है। दूसरी ओर, आयात से आयात के भुगतान के रूप में देश से धन (विदेशी मुद्रा) का बहिर्वाह (outflow) होता है। यदि निर्यात और आयात समान हैं, तो 'व्यापार संतुलन' मौजूद है। आम तौर पर, निर्यात आयात के बराबर नहीं होतो है। 'व्यापार अधिशेष' तब होता है, यदि निर्यात का मान आयात के मान से अधिक हो जाता है। दूसरी ओर, यदि निर्यात का मान आयात के मान से कम है तो 'व्यापार घाटा' उत्पन्न होता है। जब भी हम निर्यात और आयात का उल्लेख करते हैं तो हम वस्तुओं में बाहरी व्यापार के बारे में कल्पना करते हैं, क्योंकि ये दृश्यमान होते हैं।

7.2.3 अदृश्य मदें

माल के व्यापार के अलावा, देश परामर्श, पर्यटन, जहाज–रानी आदि सेवाओं में व्यापार करता है। इसके अलावा एक देश से दूसरे देश में श्रम का प्रवास होता है। विदेशों में बडी संख्या में भारतीय काम करते हैं। इसी तरह, कई विदेशी नागरिक भारत में काम करते हैं। विदेशों में काम करने वाले भारतीय नागरिक अक्सर भारत में अपने परिवार के सदस्यों को पैसे भेजते हैं। ये एकतरफा स्थानान्तरण हैं जिसका भेजा हुआ धन के अंतर्गत होता है। सेवाओं में व्यापार की ओर भुगतान और प्रवासी श्रमिकों द्वारा प्रेषण को अक्सर 'अदृश्य' कहा जाता है। यदि आप ध्यान से भारत की भुगतान संतुलन डेटा को देखेंगे कि अदृश्य मदें भारत की व्यापार संतुलन का एक बडा हिस्सा है। 'अदृश्य मदें' में अधिशेष ने भारत को अपने व्यापार घाटे को काफी हद तक कम करने में मदद की है।

7.2.4 चालू और पूंजी खाता

भुगतान संतुलन (BoP) ढांचे में दो खाते हैं। चालू खाता एक देश से दूसरे देश में आय के प्रवाह को अंकित करता है। पूंजी खाता एक देश से दूसरे देश में पूंजी और वित्त के प्रवाह को अंकित करता है।

व्यापार में संतुलन और अदृश्य मदें मिलकर 'चालू खाता' का निर्माण करती है। चालू खाते में घाटा या अधिशेष हो सकता है। इस प्रकार हम पाते हैं कि

चालू खाता संतुलन = व्यापार संतुलन + अदृश्य मदें की ... (7.3)

भुगतान संतुलन (BoP) के पूंजी खाते में सीमा पार खरीद और अचल और वित्तीय संपत्तियों की बिक्री शामिल है। यह सम्पत्तियाँ (i) भौतिक संपत्ति जैसे कि भूमि, कारखाने, घर, आदि हो सकती है, या (ii) वित्तीय पररसंपत्तियां जैसे स्टॉक और बॉन्ड। आपको ध्यान देना चाहिए कि प्रत्येक लेनदेन को पूंजी खाते में दो बार दर्ज किया जाता है – एक बार 'जमा धन' के रूप में और फिर से एक 'नामे (डेबिट)' प्रविष्टि के रूप में, जिससे प्रत्येक लेनदेन के दो पहलू दर्ज होते हैं। उदाहरण के लिए एक विदेशी वित्तीय परिसंपत्ति जैसे कि विदेशी सरकारी बॉन्ड या घरेलू निवासी द्वारा विदेशी फर्म के शेयरों की खरीद में एक परिसंपत्ति आयात और एक पूंजी बहिर्वाह (विदेशी संपत्ति के लिए घरेलू निवासी द्वारा भुगतान) शामिल है।

आइये इस बिंदु पर आगे चर्चा करते हैं। मान लीजिए कि भारत द्वारा आयात का मूल्य भारत द्वारा निर्यात के मूल्य से अधिक है। इस प्रकार भारत के शुद्ध निर्यात (NX) ऋणात्मक (negative) है। अपने अतिरिक्त आयात का भुगतान करने के लिए भारत को विदेशों से कर्ज लेना पडता है।

इसका मतलब है भारत के खाते में विदेशी मुद्रा आ रही है। इसलिए, इसे पूंजी खाते में एक 'जमा धन' (credit) के रूप में दिखाया गया है। जब इस ऋण पर वार्षिक आधार पर ऋणदाता देश को ब्याज का भुगतान किया जाता है तो भारत से पूंजी का बहिर्वाह होता है। ऋण की ब्याज सेवा (ब्याज भुगतान) को भारत के चालू खाते में एक नामे (debit) के रूप में दर्ज किया गया है। इसी तरह जब पूंजी देश से बाहर जाती है तो इसे एक नामे (डेबिट) के रूप में दिखाया जाता है (जैसे भारतीय दूरसंचार कंपनी एयरटेल नाइजीरिया में कुछ निवेश करती है)। हालांकि एयरटेल द्वारा नाइजीरिया में किया गया निवेश एयरटेल को सालाना आधार पर रिटर्न प्रदान करेगा। उस रिटर्न को एयरटेल के लिए आय के रूप में गिना जाएगा और इसे चालू खाते में जमा धन के रूप में दिखाया जाएगा।

पूँजी खाते में कई प्रमुख मद हैं (i) बाह्य सहायता, (ii) बाह्य वाणिज्यिक उधार, (iii) अल्पकालिक ऋण, (iv) बैंकिंग पूंजी, (v) विदेशी निवेश, और (vi) अन्य प्रवाह। उपरोक्त मदों में प्रत्येक के प्रवाह दोनों दिशाओं में हैं। उदाहरण के लिए, यदि हम भारत के पूंजी खाते पर विचार करते हैं तो विदेशी निवेश दोनों दिशाएं (जमा और नामे) हैं। कई विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियां हैं जो भारत में निवेश करती हैं। इसी समय कई भारतीय बहुराष्ट्रीय कंपनियां हैं जो विदेशों में निवेश करती हैं। इस प्रकार, हम उपरोक्त प्रत्येक मद के तहत शुद्ध राशि पर विचार करते हैं।

अंतरराष्ट्रीय लेन–देन में समय अंतराल होता हैं; उदाहरण के लिए निर्यात पर डेटा सीमा शुल्क से एकत्र किया जाता है समय पर माल भेज दिया जाता है जबकि उसी के लिए भुगतान छह महीने बाद प्राप्त होते हैं और इसलिए उस वर्ष के भुगतान संतुलन (BOP) में दर्ज नहीं किया जाता है। इसलिए भुगतान संतुलन (BoP) खाते को संतुलित करने के लिए भूलचूक के लिए एक प्रविष्टि शामिल होती है।

जब पूंजी प्रवाह पूंजी बहिर्वाह से अधिक हो जाता है तो देश में पूंजी खाता अधिशेष होता है। विपरीत स्थिति में जब बहिर्वाह से अधिक प्रवाह होता है तो उसमें पूंजी खाता में घाटा होता है।

7.3.5 भुगतान का संतुलन

जब हम चालू खाते और पूंजी खाते को जोडते हैं तो हमें 'भुगतान संतुलन' (BOP) प्राप्त होता है। तालिका 7.1 में हम वर्ष 2018–19 के लिए भारत के भुगतान का संतुलन प्रस्तुत कर रहे हैं। आपको ध्यान देना चाहिए कि 2018–19 के दौरान भारत के लिए व्यापार घाटा 180283 मिलियन डॉलर है। हालांकि उस दौरान शुद्ध अदृश्य मदें $ 123026 मिलियन पर सकारात्मक हैं (इसका मतलब भारत से बहिर्वाह घटाने के बाद भारत में शुद्ध प्रवाह है)। जब हम इन दोनों को जोडते हैं तो हम भारत के लिए चालू खाता घाटा प्राप्त करते हैं, जो $ 57257 है।

वर्ष 2018–19 के लिए भारत का पूंजी खाता $ 54403 मिलियन का अधिशेष दिखाता है (तालिका 7.1 देखें)। लेखांकन प्रक्रिया में कुछ त्रुटियां और चूक हैं जो कि $ 486 मिलियन की है। जब हम चालू खाते और पूंजी खाते को जोडते हैं तो हम $ 3339 मिलियन (–) का समग्र संतुलन प्राप्त करते हैं। इससे भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में 3339 मिलियन डॉलर की वृद्धि हुई है।

आपको ध्यान देना चाहिए कि भुगतान संतुलन हमेशा संतुलित रहता है क्योंकि यह खाता समरूप है। हालांकि भुगतान संतुलन हमेशा संतुलित रहता है हम समग्र भुगतान संतुलन अधिशेष या घाटे के बारे में बात कर सकते हैं। वर्तमान और पूंजी खाता शेष को जोडकर कुल मिलाकर भुगतान संतुलन संतुलन प्राप्त किया जाता है।

निम्नलिखित मामलों में एक देश के पास BOP अधिशेष होता हैः (i) चालू खाता अधिशेष और पूंजी खाता अधिशेष भी है; (ii) चालू खाता घाटा है लेकिन पूंजी खाता अधिशेष जो बडा है; (iii) एक चालू खाता अधिशेष और एक अपेक्षाकृत छोटा पूंजी खाता घाटा है। भुगतान संतुलन निम्न परिस्थितियों में घाटे में होगा (i) जब चालू और पूंजी दोनों खातों पर घाटा हो या (ii) जब चालू या पूंजी खातों में से किसी एक में अपेक्षाकृत बडा घाटा हो।

निजी और सरकारी अभिकर्ता द्वारा किए गए लेनदेन के अलावा भुगतान संतुलन (BoP) के पूंजी खाते में आधिकारिक आरक्षित लेनदेन भी शामिल होते हैं, जिसमें केंद्रीय बैंक द्वारा रखे गए विदेशी मुद्रा भंडार के स्टॉक में परिवर्तन शामिल होता है। जब भुगतान संतुलन अधिशेष होता है तो देश विदेशी मुद्रा के शुद्ध प्रवाह का अनुभव करता है जिससे विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि होती है। भुगतान संतुलन घाटे के मामले में विदेशी मुद्रा का शुद्ध बहिर्वाह होता है और विदेशी मुद्रा भंडार में कमी होती है। इस प्रकार हम निम्नलिखित समीकरण प्राप्त करते हैं:

चालू खाता संतुलन + पूंजी खाता संतुलन + विदेशी मुद्रा भंडार में परिवर्तन = 0 ..(7.4)

तालिका 7.1: भारत का भुगतान संतुलन (2018–19)

मदें	**2018–19 (यूएस $ मिलियन में)**
I चालू खाता	
1. आयात	517519
2. निर्यात	337237
3. व्यापार संतुलन (2–1)	– 180283
4. अदृश्य मदें (शुद्ध)	123026
5. चालू खाता शेष (3+4)	**– 57257**
II पूंजी खाता	
पूंजी खाता शेष	**54403**
a) बाह्य सहायता (शुद्ध)	3413
b) बाह्य वाणिज्यिक उधार (शुद्ध)	10416
c) लघु अवधिक ऋण	2021
d) बैंकिंग पूँजी (शुद्ध)	7433
e) विदेशी निवेश (शुद्ध)	30094
f) अन्य प्रवाह (शुद्ध)	1026
III भूलचूक	–486
IV समग्र शेष	**–3339**
V विदेशी मुद्रा भंडार में परिवर्तन कमी (+) वृद्धि (–)	–3339

स्रोतः आर्थिक सर्वेक्षण 2019–20, खंड 2, पृष्ठ 104

खुली अर्थव्यवस्था के कुछ फायदे हैं। चूंकि माल आयात किया जा सकता है एक खुली अर्थव्यवस्था अपने नागरिकों को विभिन्न प्रकार के सामानों का उपभोग करने की अनुमति देती है; यहां तक कि जिसका देश में उत्पादन नहीं होता । दूसरा, उत्पादन सामग्री जैसे कच्चे माल पूंजीगत वस्तुएं और प्रौद्योगिकी का आयात देश में उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए किया जाता है। तीसरा, देश अपने माल और सेवाओं का निर्यात कर सकता है, जिससे बाजार का विस्तार और सकल मांग में वृद्धि हो सकती है। खुली अर्थव्यवस्था के कुछ नुकसान भी हैं – देश अन्य अर्थव्यवस्थाओं पर निर्भर है। यह अन्य अर्थव्यवस्थाओं में व्यापार चक्र जैसे आर्थिक जोखिमों के संपर्क में होता है।

देश में बहुत सारे विदेशी निवेश हो सकते हैं जिससे उत्पादन का स्तर ऊँचा होता है। कुछ अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के कारण यदि पूंजी का बहिर्वाह होता है तो इससे उत्पादन पर बुरा प्रभाव पडेगा

बोधप्रश्न –1

1. विदेशों से प्राप्त शुद्ध घटक आय की व्याख्या करें ।

   .....

   .....

   .....

   .....

2. क्या सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) सकल घरेलु उत्पाद (GDP) से छोटा हो सकता है? व्याख्या करें ।

   .....

   .....

   .....

   .....

3. भुगतान खातों के संतुलन में 'अदृश्य मदें' शब्द को पररभाषित करें । अदृश्य मदें के दो उदाहरण दें।

   .....

   .....

   .....

   .....

4. बताएं कि भुगतान संतुलन हमेशा संतुलित क्यों रहता है।

   .....

   .....

   .....

   .....

5. बताएं कि क्या निम्नलिखित कथन 'सत्य' या 'गलत' हैं, प्रत्येक मामले में अपने उत्तर के कारण बताएं :

a) एक देश के पास एक चालू खाता अधिशेष हो सकता है, भले ही उसके पास नकारात्मक व्यापार संतुलन (या व्यापारिक व्यापार घाटा) हो।

b) जब भारतीय फर्म विदेशी फर्मों (बहिर्वाह FDI) में निवेश करती हैं, तो इसे पूंजी खाते में जमा धन के रूप में दिखाया जाता है।

c) एक देश के पास चालू खाता अधिशेष होने पर भी समग्र भुगतान संतुलन घाटा हो सकता है।

d) जब किसी देश में चालू खाता घाटा ($ 20,000 का) और पूंजी खाता अधिशेष ($ 8000) तो उसके विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि होगी।

.....

.....

.....

.....

7.3 शुद्ध निर्यात फलन

याद करें कि शुद्ध निर्यात NX को (X - M) से प्राप्त किया जाता है। इस प्रकार, NX का मान निर्यात (X) और आयात (M) के मानों पर निर्भर करता है। याद रखें कि निर्यात से बाजार का विस्तार होता है। इस प्रकार निर्यात बढ़ने पर कुल मांग (AD) बढ़ती है। इसलिए, अधिकांश देशों का उद्देश्य अपने निर्यात को बढ़ावा देना है। हालाँकि एक देश कितना निर्यात कर सकता है यह उसके नियंत्रण में नहीं होता है। उदाहरण के लिए भारत का निर्यात अपने व्यापारिक भागीदारों के सकल घरेलु उत्पाद स्तर पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, यदि संयुक्त राज्य अमेरिका में विकास की अच्छी संभावनाएं हैं तो वे भारत से अधिक आयात कर सकते हैं। इस प्रकार हम निर्यात को बहार से निर्धारित मानते हैं। इसका मतलब है कि निर्यात घरेलू अर्थव्यवस्था के उत्पादन स्तर पर निर्भर नहीं करता है।

आयात का व्यवहार हालांकि अलग है। जैसे–जैसे देश में उत्पादन स्तर बढ़ता है, अधिक आयात की आवश्यकताएं होती हैं। आयातित कच्चे माल और विदेशी प्रौद्योगिकी की मांग बढ़ जाती है क्योंकि किसी देश की जीडीपी का स्तर बढ़ता है। इसलिए, हम मानते हैं कि आयात उत्पादन के लिए आनुपातिक हैं।

$M = mY$ ... (7.5)

जब हम निर्यात (यानी शुद्ध निर्यात) से आयात घटाते हैं तो हम पाते हैं कि NX उत्पादन (Y) का उलटा फलन है। जब Y कम होता है (अर्थव्यवस्था उत्पादन के निचले स्तर पर चल रही होती है), NX सकारात्मक होगा, क्योंकि X, M से अधिक है। Y उच्च होने पर (अर्थव्यवस्था उच्च स्तर के उत्पादन में चल रही है), NX ऋणात्मक होगा, क्योंकि M, X से बडा है।

एक और कारक है जो निर्यात और आयात को निर्धारित करता है, अर्थात, विनिमय दर। जैसे–जैसे घरेलू मुद्रा का मूल्य घटता है (यानी, घरेलू मुद्रा का मूल्यह्रास होता है) विदेशी मुद्रा के संदर्भ में घरेलू सामान सस्ता हो जाता है। उदाहरण के लिए मान लीजिए कि चल रही वर्तमान विनिमय दर US $ 1 = रु .70 है।

इसका मतलब है 1US $ के साथ एक अमेरिकी Rs. 70 मूल्य का भारतीय सामान खरीद सकता है। अब भारतीय रुपये में मूल्यह्रास होता है जहां 1US $ = रु .75 हो जाती है। आप गौर करेंगे की अमेरिकी डॉलर महंगा हो गया है और भारतीय रुपया सस्ता हो गया है। अब 1US $ के साथ अमेरिकी भारतीय रु 75 कीमत वस्तु खरीद सकता है। उपरोक्त का एक निहितार्थ यह है कि सामान्य तौर पर भारतीय वस्तुओं की कीमतों में गिरावट आई है। मांग का कानून संचालित होगा और भारतीय वस्तुओं (यानी, भारतीय निर्यात) की मांग बढ़ेगी। भारतीय मुद्रा के मूल्यह्रास का भारतीय आयात पर भी प्रभाव पडेगा। हमने उल्लेख किया कि मूल्यह्रास के कारण भारतीय वस्तुएं सस्ती हो जाती है। यदि हम इसे दूसरी तरफ से देखें, तो भारतीय मुद्रा के ह्रास के कारण विदेशी सामान (यानी भारतीय आयात) महंगा हो जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय रुपये के मूल्यह्रास के कारण, (i) भारतीय निर्यात में वृद्धि होती है, और (ii) भारतीय आयात में कमी आती है। परिणामस्वरूप भारतीय मुद्रा के अवमूल्यन होने पर NX बढ़ जाता है।

इस प्रकार NX घरेलू उत्पादन और विनिमय दर पर निर्भर करता है। घरेलू उत्पादन बढ़ने से NX में गिरावट आती है। इसके अलावा घरेलू मुद्रा के मूल्यह्रास से NX में वृद्धि होती है। इसी तरह घरेलू मुद्रा की मूल्य वृद्धि से NX में कमी आती है। मूल्य वृद्धि का अर्थ है विदेशी मुद्रा के संदर्भ में घरेलू मुद्रा के मूल्य में वृद्धि।

7.4 खुली अर्थव्यवस्था में उत्पादन का संतुलन

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, बाह्य क्षेत्र के अलावा अर्थव्यवस्था के लिए बाजार का विस्तार विचाराधीन है। इस प्रकार बाह्य क्षेत्र मौजूद होने पर कुल मांग में वृद्धि होती है। इकाई 6 में हमने जिस तीन–क्षेत्रों पर चर्चा की हमने निम्नलिखित प्राप्त किए:

$$AD = C + I + G \quad \ldots (7.6)$$

जहाँ,

C = उपभोग

I = निवेश

G = सरकारी व्यय

चार–क्षेत्र प्रतिमान में, कुल मांग के निम्न घटक होते है:

$$AD = C + I + G + (X - M) = C + I + G + NX \quad \ldots (7.7)$$

हम रेखाचित्र 7.1 में कुल मांग वक्र का वर्णन किया है। इस रेखाचित्र में हमने (C + I + G) वक्र दिखाया है। हमने इसमें शुद्ध निर्यात (NX) जोडा है ताकि AD कर्व में बदलाव हो। आपको ध्यान देना चाहिए कि यह समानांतर बदलाव नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि शुद्ध निर्यात (NX) वक्र नीचे की ओर झुका हुआ है। इस प्रकार (C + I + G) और (C + I + G + NX) के बीच का अंतर उत्पादन में वृद्धि के साथ नीचे आता है।

जब कोई बाह्य क्षेत्र नहीं था (अर्थव्यवस्था बंद थी), तो उत्पादन संतुलन Y_1 था। हालांकि जब अर्थव्यवस्था खुलती है तो उत्पादन संतुलन में Y_1 से Y_2 तक वृद्धि होती है।

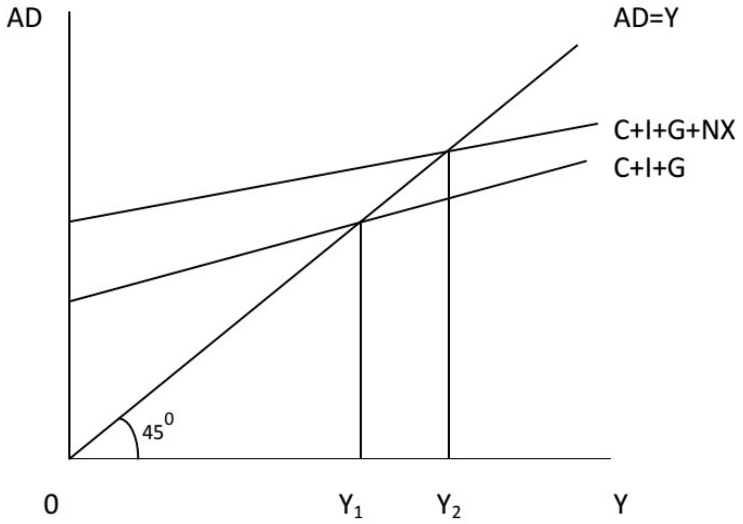

रेखाचित्र 7.1 उत्पादन का संतुलन स्तर

बोधप्रश्न –2

1. शुद्ध निर्यात को परिभाषित करें। क्या यह ऋणात्मक हो सकता है?

……

……

……

……

2. शुद्ध निर्यात पर निम्नलिखित के प्रभाव को समझाइए।

(a) घरेलू मुद्रा का मूल्यह्रास है।

(b) घरेलू उत्पादन में वृद्धि ।

……

……

……

……

3. स्पष्ट् करें कि एक खुली अर्थव्यवस्था में संतुलन कैसे निर्धारित किया जाता है।

……

……

……

……

7.5 सार संक्षेप

इस इकाई में हमने खुली अर्थव्यवस्था में विभिन्न प्रवाह पर चर्चा की है। व्यापार संतुलन निर्यात और आयात के मूल्यों का अंतर होता है। निर्यात और आयात के मूल्यों के आधार पर व्यापार संतुलन सकारात्मक या ऋणात्मक हो सकता है। जब हम व्यापार खाते में शुद्ध अदृश्य मदें और प्रेषण जोडते हैं, तो हम चालू खाता शेष प्राप्त करते हैं। चालू खाते के अलावा, एक पूंजी खाता भी है, जो पूंजी और वित्त के प्रवाह को दर्ज करता है। जब चालू खाता शेष और पूंजी खाता शेष को एक साथ जोड दिया जाता है, तो हम भुगतान संतुलन शेष प्राप्त करते हैं। याद रखें कि भुगतान संतुलन हमेशा संतुलित रहता है।

7.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोधप्रश्न –1

1) खंड 7.2.1 का संदर्भ लें और उत्तर दें।

2) यदि विदेश से शुद्ध कारक आय (NFIA) नकारात्मक है, तो GNP, GDP से कम होगी।

3) उप–खंड 7.2.2 का संदर्भ लें। उदाहरण जहाज रानी और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन हो सकते हैं।

4) उप–भाग 7.2.4 का संदर्भ लें और उत्तर दें।

5) (ए) सही, (बी) गलत, (सी) सही, (डी) सही

बोधप्रश्न –2

1) खंड 7.2.1 का संदर्भ लें और उत्तर दें। यदि आयात निर्यात से अधिक है, तो शुद्ध निर्यात ऋणात्मक होगा।

2) (a) शुद्ध निर्यात बढ़ेगा।

(b) शुद्ध निर्यात घटेगा।

3) धारा 3.4 का संदर्भ लें और उत्तर दें।